Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 86–90

WOMEN'S STRUGGLE IN THE NOVEL 'CHAAK': AN ANALYSIS

‘चाक’ उपन्यास में नारी संघर्ष: एक विश्लेषण

Manisha Mandal [1], Sanjay Kumar Singh [2]

[1] Research Scholar, Binod Bihari Mahto Koyalanchal University, Dhanbad
[2] Head of Department, Hindi, P.K. Rai Memorial College, Dhanbad

ABSTRACT

English: A whole group of sensitive writers like the famous Hindi writer Maitreyi Pushpa feel that the country may have become independent on 15th August 1947, but women have not got freedom in the true sense. Even today they are fighting the battle of half the population on their own. From tribal life to villages and cities, from metropolises to metropolitan cities, the safety and respect of women is in the hands of men. They can become victims of sexual violence anywhere, be it in public places, workplace, while going to school or college. The female characters of Maitrayi Pushpa's novels not only declare war against this rigid, male chauvinistic system, but also emerge victorious. The novel 'Chaak' is a Gram Gandhi creation. In this novel, the joys and sorrows, happiness and sadness, festivals, economic challenges, social conflicts, caste hatred and the rapidly changing political equations of rural life have been depicted in an impressive manner. Just as the potter's wheel keeps rotating and creating new things, the wheel of time also keeps rotating and creating something new. 'Chaak' also tells the story of a dynamic village. In this creation, an attempt has been made to comprehensively depict the rapid changes taking place in the food habits, clothing, conduct, behaviour, economic activity, political awareness etc. of the people there. The exodus of talents in the country has become a nationwide problem. A chain has been formed for this. The migration from village to city and city to metropolis and again from metropolis to foreign countries is not only causing qualitative loss in terms of human resources, the increasing number of old age homes in cities is creating a different deep human crisis. Despite all this, it is not that easy for the kind-hearted villagers to get rid of sensitive issues like excessive love for villages, pain of separation from villages or their village in the nostalgia. For those illiterate or semi-literate people, whose roots are culturally connected to villages, villages are still both heaven and hell. In this regard, the author herself says- "Before you is the story of Atarpur village. A story created by imagination of those people who love their land so much that Atarpur is heaven and hell for them. The mutual relations, affection and loving behaviour of the farmers in every nook and corner of this village keep them connected to each other, while the natural jealousy, envy and surge of ambitions also keep them biting each other. In this way, the pulse of life remains constant in Atarpur.

Hindi: हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका मैत्रेयी पुष्पा जैसी संवेदनशील लेखिकाओं की एक पूरी जमात यह महसूस करती हैं कि पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालिस को देश आज़ाद जरूर हो गया, किंतु औरतों को सही मायने में आज़ादी नहीं मिली। वे आज भी आधी आबादी की लड़ाई अपने बल पर लड़ रही हैं। वनवासी जीवन से लेकर गाँव और शहर तक, महानगरों से लेकर मेट्रापालिटिन महानगरों तक औरतों की सुरक्षा एवं उनका सम्मान पुरुषों की मुट्ठियों में जकड़ा पड़ा है। वे सार्वजनिक स्थल, कार्य-स्थल, स्कूल-कॉलेज आते-जाते कहीं भी यौन-हिंसा का शिकार हो सकती हैं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के नारी-चरित्र इन्ही जड़वादी, पुरुषवादी व्यवस्था के खिलाफ जंग का एलान ही नहीं करती हैं- विजेता बनकर भी उभरती हैं। उपन्यास ‘चाक’ एक ग्रामगंधी रचना है। इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन के सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, तीज-त्यौहार, आर्थिक चुनौतियाँ, सामाजिक संघर्ष, जातिगत विद्वेष एवं तेजी से बदल रहे राजनीतिक समीकरण को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है। जिस प्रकार कुम्हार का चाक गोल-गोल घूमता हुआ सदैव नव-सृजन करता है उसी तरह समय का चक्र भी कुछ इसी प्रकर गोल-गोल घूमता हुआ कुछ न कुछ नया सृजित करता रहता है। ‘चाक’ भी गतिशील गाँव की कहानी कहता है। वहाँ के लोगों के खान-पान, परिधान, आचरण-व्यवहार, आर्थिक-सक्रियता, राजनीतिक जागरुकता आदि में

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.3699

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

जो तेजी से बदलाव आ रहे हैं, इस रचना में उन सभी का चित्रण समग्रता में करने का प्रयास किया गया है। देश में प्रतिभाओं का पलायन एक राष्ट्रव्यापी समस्या बन गई। इसकी एक शृंखला सी बन गई है। गाँव से शहर और शहर से महानगर, पुनः महानगरों से विदेशों की ओर पलायन से मानव-संसाधन की दृष्टि से गुणात्मक स्तर पर तो क्षति हो ही रही है, शहरों में वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या एक अलग गहन मानवीय संकट पैदा कर रही है। इन सभी के बावजूद गाँवों में रहने वाले लोगों के अतिशय ग्राम प्रेम, गाँवों से बिछुड़ने के दर्द या अतीतराग में अपना गाँव जैसे संवेदनशील मुद्दों से मुक्त होना सहृदय ग्रामीणों के लिए उतना सहज नहीं है। उन अनपढ़ या अधपढ़े लोगों, जिनकी जड़ें संस्कारतः गाँवों से जुड़ी हुई हैं- उनके लिए गाँव आज भी स्वर्ग-नर्क दोनों है। इस विषय में स्वयं लेखिका कहती हैं- ''आपके सामने अतरपुर गाँव की कहानी है। कल्पना से रची-गढ़ी उन मनुष्यों की कथा जो अपनी धरती को इतना प्यार करते हैं कि अतरपुर ही उनके लिए स्वर्ग-नर्क है। इस गाँव के जर्रे-जर्रे में किसानों के आपसी रिश्ते, लगाव और मुहब्बत भरा व्यवहार उन्हें एक दूसरे से जोड़े रखता है तो स्वाभाविक ईष्र्या, डाह और महत्त्वाकांक्षाओं का उफान आपस में छीलता काटता भी है। इस तरह अतरपुर में जिंदगी की धड़कन बराबर बनी रहती है।''

1. प्रस्तावना

हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका मैत्रेयी पुष्पा जैसी संवेदनशील लेखिकाओं की एक पूरी जमात यह महसूस करती हैं कि पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालिस को देश आज़ाद जरूर हो गया, किंतु औरतों को सही मायने में आज़ादी नहीं मिली। वे आज भी आधी आबादी की लड़ाई अपने बल पर लड़ रही हैं। वनवासी जीवन से लेकर गाँव और शहर तक, महानगरों से लेकर मेट्रापालिटिन महानगरों तक औरतों की सुरक्षा एवं उनका सम्मान पुरुषों की मुट्ठियों में जकड़ा पड़ा है। वे सार्वजनिक स्थल, कार्य-स्थल, स्कूल-कॉलेज आते-जाते कहीं भी यौन-हिंसा का शिकार हो सकती हैं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के नारी-चरित्र इन्ही जड़वादी, पुरुषवादी व्यवस्था के खिलाफ जंग का एलान ही नहीं करती हैं- विजेता बनकर भी उभरती हैं। उपन्यास 'चाक' एक ग्रामगंधी रचना है। इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन के सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, तीज-त्यौहार, आर्थिक चुनौतियाँ, सामाजिक संघर्ष, जातिगत विद्वेष एवं तेजी से बदल रहे राजनीतिक समीकरण को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है। जिस प्रकार कुम्हार का चाक गोल-गोल घूमता हुआ सदैव नव-सृजन करता है उसी तरह समय का चक्र भी कुछ इसी प्रकर गोल-गोल घूमता हुआ कुछ न कुछ नया सृजित करता रहता है। 'चाक' भी गतिशील गाँव की कहानी कहता है। वहाँ के लोगों के खान-पान, परिधान, आचरण-व्यवहार, आर्थिक-सक्रियता, राजनीतिक जागरुकता आदि में जो तेजी से बदलाव आ रहे हैं, इस रचना में उन सभी का चित्रण समग्रता में करने का प्रयास किया गया है। देश में प्रतिभाओं का पलायन एक राष्ट्रव्यापी समस्या बन गई। इसकी एक शृंखला सी बन गई है। गाँव से शहर और शहर से महानगर, पुनः महानगरों से विदेशों की ओर पलायन से मानव-संसाधन की दृष्टि से गुणात्मक स्तर पर तो क्षति हो ही रही है, शहरों में वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या एक अलग गहन मानवीय संकट पैदा कर रही है। इन सभी के बावजूद गाँवों में रहने वाले लोगों के अतिशय ग्राम प्रेम, गाँवों से बिछुड़ने के दर्द या अतीतराग में अपना गाँव जैसे संवेदनशील मुद्दों से मुक्त होना सहृदय ग्रामीणों के लिए उतना सहज नहीं है। उन अनपढ़ या अधपढ़े लोगों, जिनकी जड़ें संस्कारतः गाँवों से जुड़ी हुई हैं- उनके लिए गाँव आज भी स्वर्ग-नर्क दोनों है। इस विषय में स्वयं लेखिका कहती हैं- ''आपके सामने अतरपुर गाँव की कहानी है। कल्पना से रची-गढ़ी उन मनुष्यों की कथा जो अपनी धरती को इतना प्यार करते हैं कि अतरपुर ही उनके लिए स्वर्ग-नर्क है। इस गाँव के जर्रे-जर्रे में किसानों के आपसी रिश्ते, लगाव और मुहब्बत भरा व्यवहार उन्हें एक दूसरे से जोड़े रखता है तो स्वाभाविक ईष्र्या, डाह और महत्त्वाकांक्षाओं का उफान आपस में छीलता काटता भी है। इस तरह अतरपुर में जिंदगी की धड़कन बराबर बनी रहती है।''1

'चाक' उपन्यास के कथानक के केंद्र में वहाँ की स्त्रियों पर किए जाने वाले अंतहीन शोषण, अत्याचार, हत्या और व्यभिचार को ही रखा गया है। ''इस गाँव के इतिहास में दर्ज दास्तानें बोलती हैं- रस्सी के फंदे पर झूलती रुकमणी, कुँए में कूदने वाली रामदेई, करबन नदी में समाधिस्थ नारायणी....ये बेबस औरतें सीता मइया की तरह 'भूमि-प्रवेश' अपने शील-सतीत्व के लिए कुर्बान हो गईं..... और न जाने कितनी.....।''2 मर्द जाति की नाक ऊँची रखने के लिए स्त्री जाति की यह कुर्बानी नई नहीं है। सदियों से ऐसा ही होता आया है। अतरपुर गाँव में भी पच्चीस वर्षीय गर्भिणी स्त्री रेशम की हाल में ही हत्या हुई है। किसी प्रकार की कोई कानूनी कार्रवाई नहीं हुई। धीरे-धीरे ग्रामीण-जीवन सहज सामान्य गति पकड़ता जा रहा है- ''स्त्रियाँ जिंदगी के गीतों, संस्कारजनित उत्सवों और रोजमर्रा की जरूरतों के चलते अपने आपको प्राकृतिक लीला के रूप में उतार रही हैं! या कि फिर भीतर से उमड़ते करुण खूँखार हाहाकार को पीकर महाविनाश को चुनौती देती हुई जीने की अदम्य चेष्टा कर रही हैं।''3 रेशम अकेली नही है। उसके साथ रुकमणी, रामदेई, गुलकंदी जैसी हजारों-लाखों स्त्रियाँ हैं, जिनकी कुबानी की स्मृति मात्र से सारंग जैसी संवेदनशील स्त्री असहज और बेचैन हो रही है, अंतद्र्वंद्व में घिरी एक बड़ी और निर्णायक लड़ाई लड़ने का मंसूबा बना रही है।

मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में ग्रामीण परिवेश के नारी उत्थान को दर्शाया गया है। 'चाक' एक स्त्री की हत्या की पृष्ठभूमि में औरत की आजादी के लिए लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका सारंग स्त्री जाति की अस्मिता और आत्म-सम्मान की लड़ाई पुरुष वर्चस्ववादी ताकतों के विरुद्ध लड़ती है। उसकी लड़ाई दोहरे स्तर की है। एक ओर वह अपने निजी जीवन में अपनी इयत्ता, अस्मिता, स्वतंत्रता, इच्छा और आकांक्षाओं की लड़ाई पारिवारिक स्तर पर लड़ती है जिसमें उसका पति ही उससे संबंध विच्छेद करके सबसे बड़ा राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी के रूप में सामने आकर खड़ा हो जाता है वहीं दूसरी ओर वह अपनी फुफेरी बहन रेशम और गुलकंदी की 'आॅनर किलिंग' की लड़ाई वह अपने समाज के शक्तिशाली लोगों के

खिलाफ लड़ती है और हत्यारों को सजा दिलवाने में कामयाब होती है। सारंग अपनी स्वतंत्रता, अपनी इच्छा, अपने अस्तित्व और मान-सम्मान के लिए परिवार, समाज यहाँ तक कि अपने पति से भी विद्रोह कर लेती है। लेखिका ने अपने उपन्यास 'चाक' के लिए समय की गतिमयता को आधार बनाया है। अतरपुर जाट किसानों का गाँव है, और जैसा है वैसा ही बने रहना चाहता है। वह हर बदलाव का विरोधी है। अभी वहाँ आधुनिकता की हवा नहीं बही है। आज़ादी के बाद घरों की आकृति बदली है, शहर जाने वाली सड़क पक्की और चैड़ी हुई है। इक्के-दुक्के सरकारी संस्थान खुलने लगे हैं। गाँव के स्कूल में बाहर के मास्टर आकर आधुनिक शिक्षा देने लगे हैं। लड़के बड़े होकर शहरों में जाकर सरकारी नौकरियों में लगने लगे हैं। सदाबहार खेती पर बुजुर्ग जाटों की चैधराहट मूँछों पर ताव देती हुई चल रही है। युवा या तो खेती या फिर फौज की नौकरी पाकर संतुष्ट हैं। लड़कियों की स्थिति यथावत बनी हुई है। किशोर उम्र तक खेतों की मेड़ पर कुलांचें भरना और फिर बाद में किसी खेतीहर या फौजी की बीवी बनकर बच्चे पैदा करना और खेती-बाड़ी का काम संभालना यही इनकी नियति है। इक्का-दुक्का लड़कियाँ गाँव के बाहर जाकर इंट्रेस की परीक्षा पास कर पाती हैं। उनके लिए बदलाव के नाम पर अभी बहुत कुछ नहीं हुआ है।

यथास्थितिवादी व्यवस्था में जब-जब परिवर्तन होता है, तब-तब समाज के सड़े-गले मूल्य एवं विश्वास टूटते हैं। समाज में जब-जब विकास की नई बयार बहती है तब-तब परंपरागत मान्यताएँ एवं आस्थाएँ ध्वस्त होती हैं। अतरपुर गाँव में आने वाले बदलाव के लिए दो तात्कालिक घटनाएँ उत्तरदायी तौर पर घटित हुईं- उपन्यास की नायिका सारंग की फुफेरी बहन रेशम की हत्या हो जाती है। रेशम उससे उम्र में पाँच साल छोटी थी। इस युवा हत्या से सारंग तिलमिला जाती है। चूँकि हत्या का मुख्य आरोपी रेशम का जेठ डोरिया और उसके साथी थे जो कि अत्यंत प्रभावशाली थे, अतः सारा गाँव उनके साथ था और चुप्पी साधे हुए था। इस बीच दूसरी दुर्घटना सामने आती है। गाँव की गुलकंदी को उसकी माँ और उसके प्रेमी बिसुनदेवा के साथ उसकी झोपड़ी में ही फूँक दिया जाता है। घटना को अंजाम होलिका दहन के दिन दिया जाता है और गाँव के प्रधान तक इसे आकस्मिक दुर्घटना का रूप देने में जुट जाते हैं। इन दोनों स्त्री-हत्याओं की वजह महज़ इतनी थी कि विधवा होने के पाँच महीने बाद गर्भवती हुई रेशम अपने बच्चे को जन्म देना चाहती थी और अपनी इच्छा से अपने बल पर बिना किसी पुरुष अवलंब का सहारा लिए अपने ढंग अपना जीवन गुजारना चाहती थी। दूसरी ओर गुलकंदी अपनी माँ की इच्छा के विपरीत दूसरी जात के मास्टर प्रेमी बिसुनदेवा के साथ शादी के लिए जिद्द किए बैठी थी। गुलकंदी का चचेरा भाई ही उसे, उसकी माँ और मास्टर तीनों को झोपड़ी सहित फूँक देता है। इस लोमहर्षक घटना के बाद भी सारा गाँव इसलिए चुप बैठा रह जाता है, क्योंकि उनकी नज़रों में गुलकंदी भी रेशम की तरह दुराचारिणी थी। इन अमानवीय एवं नृशंस हत्याओं से मर्माहत सारंग इन दोनों हत्याओं के आरोपियों को सजा दिलवाने के लिए जिम्मेदार सभी लोगों के खिलाफ़ खुला जंग छेड़ देती है। यह सब कुछ इसलिए हो पाता है कि सारंग जैसी बारहवीं पास लड़की में नारी स्वत्व की भावना जाग्रत हो गई है। समाज बदलाव के लिए तैयार नहीं है, किंतु वह बदलाव के लिए पुरातनतावादी सोच रखने वाले पुरुष वर्चस्ववादी ताकतों के विरुद्ध जंग का एलान कर देती है। वह नहीं जानती है कि इस परिवर्तन की वह शिकार है या सूत्रधार। मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार- "इतिहास कागज के पन्नों पर उतरने से पहले मानव शरीरों पर लिखा जाता है। 'चाक' गाँव के रग-रेशों में जीता हुआ आत्मीय दस्तावेज हैं। पुरुष समाज में स्त्री की अपनी पहचान का संकल्प-पत्र।''4 उपन्यास के कथ्य को स्पष्ट करने के लिए यह उदाहरण सटीक है।

'चाक' में अतरपुर गाँव की मुख्य सड़क का चकरोड से मिलना, टैªक्टर, नलकूप, बिजली, टेलीविजन आदि के साथ-साथ स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में भी बदलाव, ऊँची और छोटी जाति के लोगों में द्वन्द्व का आना, उनके उज्जड्डु, गँवईपन के स्थान पर मृदुता आना आदि परिवर्तनों को लेखिका ने सार्थक रूप में उपन्यास में चित्रित किया है। इस उपन्यास में जाट समाज में नैतिक संहिताओं की रूढ़ियों में जकड़ी पुरानी पीढ़ी के क्रूरता भरे हठ का, जिसके तहत नारी-संहिता का उल्लंघन करने वाली स्त्री से जीने का अधिकार छीन लिये जाने का चित्रण किया गया है और ऐसे समाज में स्त्री की हत्या पर हल्की सुगबुगाहट भर ही होती है। गाँव और समाज में परिवर्तन की मुहिम में सारंग परम्परागत जड़ता को तोड़कर लीक से हटकर चलती है। वह अतरपुर जैसे गाँव की जड़ मानसिकता और पिछड़ी हुई सोच को बदलकर विकास लाना चाहती है। कोई पुरुष जब किसी अमानवीय कृत्य के विरुद्ध खड़ा होने की हिम्मत नहीं जुटा पाता- इसके विरुद्ध सारंग खड़ी होती है, जो ज्यादा पढ़ी-लिखी तो नहीं है किन्तु उसकी संकल्प शक्ति दृढ़ है। सारंग का इस दिशा में कार्य करना किसी को पसन्द नहीं आता और वह स्वयं भी नहीं जानती कि वह ऐसा क्या कर रही है जिससे उसके परिवार और अन्य लोगों को भी दुःख मिल रहा है, सुख नहीं। मूल रूप में कहा जा सकता है कि पिछड़े इलाकों के अतरपुर जैसे गाँव में भी बदलाव की बयार बह चुकी है। अपने रीति-रिवाजों, जाति-संघर्षों, गीतों-उत्सवों, नृशंसताओं-प्रतिहिंसाओं, प्यार-ईष्र्याओं और कर्मकांडी अंधविश्वासों के बीच धड़कता हुआ यह गाँव आधुनिकतापरक भावबोध के स्वागत के लिए भीतर ही भीतर कसमसा रहा है। आधुनिकता की यह वैचारिक लहर सारंग और रंजीत के अंतरंग संबंधों के उतार-चढ़ाव के साथ प्रवेश करती है। शुरू से अन्त तक उपन्यास में समाज, परिवार की रूढ़ परंपराओं के विरुद्ध सारंग का संघर्ष देखा जा सकता है।

'चाक' में स्त्री के प्रेम करने का अधिकार, प्रेम-विवाह करने का अधिकार, गर्भधारण का अधिकार, मातृत्व का अधिकार, राजनीति में भागीदारी का अधिकार जैसे कई पहलुओं को कथानक के संदर्भ मे रखा गया है। इन सभी पक्षों पर विचार करने के पूर्व लेखिका की नारी विषयक अवधारणा को जान लेना समीचीन होगा। मैत्रेयी पुष्पा का मानना है कि औरत की कोई जाति नहीं होती है। ''स्त्री का कोई धर्म नहीं होता है। जिस घर में जन्म हुआ वही धर्म बना, जिससे ब्याहा गया वह धर्म हो गया। शूद्रों के लिए सेवा धर्म है। क्षत्रियों के लिए रक्षा धर्म है। वैश्यों के लिए व्यापार धर्म बताया गया है, पर स्त्री का कोई धर्म नहीं- क्योंकि इसका आधार वर्ण नहीं, जाति नहीं विशुद्ध लैंगिक भेद है।''5 स्त्री-विमर्श के प्रखर हस्ताक्षर राजेंद्र यादव का मानना है कि यह ठीक है कि स्त्रियों के लिए विचार शैली अभी विकसित नहीं हुई है, उसे वस्तु की तरह ही देखा गया है। 'चाक' का अतरपुर गाँव सामाजिक जड़ता का शिकार है। यहाँ स्त्रियाँ अभी भी मध्यकालीन जड़तावादी सोच के अंतर्गत जी रही हैं। चारो तरफ यथास्थितिवाद का बोलबाला है। सब कुछ शांत-शांत है। घरों के अंदर स्त्रियों के साथ घोर उत्पीड़न जारी है, फिर भी वे मुँह नहीं खोल पा रही हैं। घरों के बाहर उन पर हर प्रकार की बंदिशें जारी हैं फिर

भी समाज में किसी प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं है। वह देखती है कि पुरुष समाज ने अपने स्वार्थ के लिए स्त्री-समाज को घूँघट का गहना दे रखा है। सारंग स्त्रियों को उकसाती हुई कहती है- ''अरे हम इसी तरह हवन करते रहेंगे तो अपनी देहों का? हमें मारकर ही इनकी आन-बान का झंडा फहरेगा? भँवर कैसे लोग हैं ये? इनके पास अपना कुछ नही! घर-बार की खुशी, शान-शौकत हमारे घूँघट के नाम लिख दी है। तुम्हारे भइया पढ़े-लिखे बनते हैं और घूँघट ऊँचा होते ही गुर्राने लगते हंै।''6 इस प्रकार की सामाजिक जड़ता के खिलाफ किसी स्त्री का लड़ाई में कूदना आसान काम नहीं होता है, किंतु किसी न किसी को नेतृत्व का खतरा तो उठाना ही पड़ता है। सारंग जैसी स्त्रियाँ जब परिवर्तनगामी आंदोलन के लिए आवाज उठाती हैं, तो खुद-ब-खुद सदियों से पीड़ित स्त्रियाँ इसमें लामबंद होकर आंदोलन को निर्णायक मोड़ तक पहुँचाती हैं।

सामाजिक जड़ता कुछ महीने या वर्षो में स्थापित नहीं होती, ये तो सदियों की परिणति होती है। सामान्य तौर पर कहा जाता है कि परिवर्तन प्रकृति और समाज का शाश्वत एवं चिरंतन नियम है। प्रकृति में होने वाला परिवर्तन कुछ महीनों के भीतर घटित होता है और वह स्पष्टतः दृष्टिगोचर भी होता है। बच्चों और युवाओं के समाज में होने वाला परिवर्तन भी तीव्रगामी होता है। सत्ता या व्यवस्था में परिवर्तन से समाज में जो भौतिक परिवर्तन होता है वह भी त्वरित होता है, किंतु चहारदीवारी के भीतर होने वाला परिवर्तन इतनी मंद गति से होता है कि जड़वादी सोच रखने वाले चिंतक यहाँ तक कह देते हैं कि 'औरतों के लिए कुछ नहीं बदलता है।' किंतु ऐतिहासिक बदलाव के क्रम में यदाकदा क्रिया के बराबर और विपरीत प्रतिक्रिया के उदाहरण भी मिल जाते हैं। कुछ इसी प्रकार के परिवर्तन की बयार 'चाक' उपन्यास में बहती दिखलाई पड़ती है। परिवर्तन की यह लहर उपन्यास की नायिका सारंग के द्वारा उठाई गई है। वह ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं है, किंतु उसकी मति की गति हवा से भी तेज चलती है। जुझारूपन और निर्भीकता उसके दोनों हाथों के दो कामयाब हथियार हैं। ''यथास्थिति में जब-जब परिवर्तन होता है, कुछ मूल्य और विश्वास टूटते हैं। हर विकास परंपरागत मान्यताओं को बदलता और तोड़ता है। सारंग नहीं जानती कि इस परिवर्तन और विकास की शिकार है या सूत्रधार।''7 अपनी बहन के हत्यारों को सजा दिलाने के उद्देश्य के भावावेश में वह बिना कुछ सोचे-समझे इस जंग में कूद जाती है। पहली बार सारंग जाटों के जनपद में इस प्रकार की 'आॅनर किलिंग' के खिलाफ एक बुलंद आवाज ही नहीं खड़ी करती है, बल्कि पीड़ितों को न्याय दिलाने का संकल्प भी लेती है।

सारंग को इस बात का घोर आश्चर्य है कि स्त्रियाँ तो सदैव से लाचार और मुखापेक्षी रही हैं, किंतु पुरुषों की भी एक बहुत बड़ी आबादी शोषण, अन्याय और अत्याचार के खिलाफ मुँह क्यों नहीं खोलती है? रेशम के केस में वह महसूस करती है कि गाँव के बुजुर्ग एवं अन्य बहुत से लोग यह जानते हैं कि रेशम की हत्या डोरिया ने की है, फिर भी डर के मारे कोई गवाही देने को तैयार नहीं होता है। वे सब यह भी जानते हैं कि कल उनकी बारी भी आएगी, तथापि वे अपना मुँह नहीं खोल रहे हैं। प्रतिक्रिया स्वरूप वह स्पष्टतः कहती है- ''अत्याचार ढोर भी सहन नहीं करता है, सींग हिलाकर अपना विरोध दर्ज करता है, वह भी। इन नर पुंगवों को किस योनि में शामिल किया जाय?''8 यहाँ उसके द्वारा पुरुषों की एक बड़ी आबादी द्वारा सदियों से ओढ़ी जाने वाली कायरता पर शाब्दिक प्रहार करते हुए दिखाया गया है, ताकि इन लोगों में विवेक जागृत हो और वे सही-गलत में अंतर समझ सकें। विडंबना इस बात की है कि जुल्म करने वाले लोगों की संख्या मुट्ठी भर है। जुल्म सहने वालों की अपार जनशक्ति के समक्ष उनकी औकात कुछ भी नहीं हैं किंतु कायरता, विद्वेष, वैमनस्य में बँटे होने के कारण इनकी ताकत क्षीण पड़ी है। यदि वे एकजुट होकर मुट्ठी तानकर उनके सामने खड़े हो जाएँ तो पलभर में उन्हें घुटने टेकने पड़ंेगे। नारियों के सामाजिक सशक्तिकरण के पहले चरण में यह जरूरी है कि अभिवंचित और कमजोर सभी एकजुट होकर इस मुहिम में साथ दें। एक बार शक्ति अर्जित कर लेने के बाद इन्हें किसी की शक्ति अथवा सहयोग की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि ये साक्षात शक्ति हैं।

अतरपुर गाँव में स्त्री शोषण, उत्पीड़न एवं यहाँ तक कि उनकी नृशंस हत्याएँ भी बदस्तूर जारी हैं, किंतु कोई भी व्यक्ति इन सबके विरोध में खड़ा नहीं होता है। वहाँ स्त्रियों के द्वारा प्रेम करने का दुःसाहस करना एक बहुत बड़ा सामाजिक अपराध है जिसकी सजा सिर्फ और सिर्फ मौत है। विशेष बात यह भी है कि इस मामले में पंचायत ने सवर्ण, पिछड़ी, दलित आदि सभी वर्गों की स्त्रियों को एक ही तराजू के पलड़े पर तोल रखा है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध कथा-समीक्षक डॉ गोपाल राय लिखते हैं- ''इस अपराध के लिए यदि रेशम की हत्या कर दी जाती है तो गुलबंदी भी जला दी जाती है। कोई पुरुष इस अमानवीय कृत्य के विरोध में खड़ा होने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। इसके विरोध में खड़ी होती है सारंग, जो बहुत पढ़ी लिखी तो नहीं है, पर इसमें संकल्प की गजब की दृढ़ता है और जिसके संकल्प को शान देता है श्रीधर प्रजापति।''9 सारंग एक स्त्री की हत्यारे को सजा दिलवाने की जिस मुहिम पर निकली है उसमें उसका पति रंजीत कुछ दूर साथ चलकर साथ छोड़ देता है। वह गाँव के दबंग लोगों के समक्ष घुटने टेक देता है, किंतु उसकी पत्नी न्याय की इस लड़ाई में अपने कदम पीछे नहीं हटाती है। इस धर्मयुद्ध को जीतने के लिए वह साम, दाम, दंड, भेद हर प्रकार के हथियार आजमाने के लिए तैयार है। वह इसके लिए गाँव में नये आए शिक्षक श्रीधर प्रजापति को अपने साथ जोड़ती है। श्रीधर जैसा शिक्षक उसके संघर्षशील व्यक्तित्व के निर्माण में कुंभकार का काम करता है। सारंग नारी-संहिता की सभी मान्यताओं को चुनौती देती हुई, न केवल श्रीधर से देह संबंध स्थापित करती है बल्कि दैहिक संबंध बनाने के मामले में सदियों से समाज में जो दोहरा मानदंड स्थापित था, उसे भी ध्वस्त करती है। यहाँ स्पष्ट करना अपेक्षित होगा कि श्रीधर के साथ दैहिक संबंध बनाना उसका निजी फैसला है। वह श्रीधर को 'यूज' करने के उद्देश्य से ऐसा नहीं करती है। वह तो समाज में यह संदेश भेजना चाहती है कि इच्छित दैहिक संबंध बनाने का अधिकार सिर्फ पुरुषों को ही नहीं है, स्त्रियाँ भी इस मामले में समकक्ष ही हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि सारंग का चरित्र ग्रामीण परिवेश में उभरती हुई नवीन स्त्री-चेतना का प्रतीक है। जो पुरुषों के अत्याचार को चुनौती देने के लिए प्रयत्नशील है। डॉ रामचंद्र तिवारी के अनुसार ''सारंग के नेतृत्व में धरती की बेटियाँ लौह जंजीरों को काट फेंकती हैं।''10।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Pushpa, Maitreyi, Chaak, Rajkamal Publications, New Delhi, p. no. -5
ibid, p. no. -7
ibid, p. no. -7
Chaak from the cover page
Maitreyi, Pushpa, Open Windows, Samayik Prakashan, New Delhi, p. no. -19
Pushpa, Maitreyi, Chaak, Rajkamal Publications, New Delhi, p. no. -388
Chaak, Quoted from Publisher's Statement
Pushpa, Maitreyi, Chaak, Rajkamal Publications, New Delhi, p. no. -16
Rai, Gopal, History of the Hindi Novel, Rajkamal Publications, New Delhi, p. no. -388
Tiwari, Dr. Ramchandra, Hindi prose literature, University Publications, p. no. 355